माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

2022

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
General Hindi	0 5 1	English

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

म.प्र.,भोपाल,माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल
MADHYAPRADE... AL

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 – 2207257

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	5	4	3	4	3	3	1

शब्दों में

Two	Five	Four	Three	Four	Three	Three	One

BOARDOFSEC...
माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में — शब्दों में —

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 044

ग – परीक्षा की दिनांक 19 | 02 | 224

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्डरी परीक्षा

शाला कोड 541125

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
N. Dongi	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	(Lecturer) S.S.M. Waidhan V.NO.- 1912162

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार... स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करे और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें →

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें →

toddyindia.com

कुल अक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1

(i) उत्तर:- जग-जीवन का।

(ii) उत्तर:- तुलसीदास।

(iii) उत्तर:- जब मन अच्छा हो।

(iv) उत्तर:- चाँद सिंह को।

(v) उत्तर:- मनोहर श्याम जोशी।

(vi) उत्तर:- उपरोक्त सभी

प्रश्न क्र. 2

(i) उत्तर:- प्रत्याशा।

(ii) उत्तर:- लछमिन।

(iii) उत्तर:- मराठी।

(iv) उत्तर:- कम।

(v) उत्तर:- उत्साह।

(vi) उत्तर:- मात्रिक।

(vii) उत्तर:- आकाश।

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 3

i) बात की चूड़ी मर जाना	बात का प्रभावहीन हो जान
अवधूत	शिरीष के फूल
iii) सिल्वर वैडिंग	यशोधर बाबू
iv) कहानी का केन्द्रीय बिन्दु	कथानक
v) चौपाई छन्द	16-16 मात्राएँ
vi) तत्सम	संस्कृत के मूल शब्द

प्रश्न क्र. 4

MPBSE

(i) उत्तर :- उषा का जादू सूर्योदय होने पर टूटता है।

(ii) उत्तर पहलवान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

(iii) उत्त न्धु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर ~~अजासबनगर~~ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा था।

(iv) उत्तर आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि ~~एक~~ पन्द्रह से बीस मिनट ~~घंटे से अधिक~~ होनी चाहिए।

(v) उत्तर :- शब्दगुण तीन प्रकार के होते हैं।

(vi) उ :- दूसरा घर कर लेना मुहावरे का अर्थ है - ~~अपना मत बदल देना~~। "पुनर्विवाह कर लेना"

(vii) उ र :- क्रिया की विशेषता का बोध कराने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

ST-16M4

www.odd

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 5

(i) सत्य।

(ii) असत्य।

(iii) सत्य।

(iv) असत्य।

(v) असत्य।

(vi) असत्य।

MPBSE

प्रश्न क्र. 6

उत्तरः– चिड़िया के बच्चे इस आशा से अपने नीड़ो से झाँक रहे होंगे कि:–

(1) उन्हें उम्मीद होगी कि उनके माता-पिता आएँगे और उन्हें भोजन देंगे।

(2) वे सारा दिन अपने माता-पिता के बिना अकेले रहकर व्याकुल हो गए होंगे।

(3) वे अपने माता पिता से मिलने तथा उनका स्नेह पाने के लिए आतुर होंगे।

प्रश्न क्र. 7

उत्तरः– उषा कविता में प्रातःकालीन नभ की तुलना

प्रश्न क्र.

राख से लीपे हुए चूल्हे से की गई है। भोर के समय आकाश नम एवं गीला होता है। उस समय उसका रंग राख से लीपे हुए चूल्हे के समान मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूख कर साफ हो जाता है उसी प्रकार आकाश भी कुछ देर बाद स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

प्रश्न क्र॰ 8

उत्तरः— भक्तिन के बाद महादेवी वर्मा को ग्रामीण संस्कृति वहाँ के रहन-सहन, वेशभूषा आदि का अच्छा ज्ञान हो गया था। क्योंकि भक्तिन महादेवी के घर में भी अपने गाँव के घर जैसी ही रहती और भोजन बनाती। जैसे-गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, बाजरे के तिलवाले ठण्डे पुए, मकई की लपसी आदि बनाकर लेखिका को खिलाती। भक्तिन भोजन में मीठा नहीं बनाती थी।

महादेवी वर्मा ने उसे कई बार शहरी तौर-तरीके अपनाने के लिए कहा पर वह नहीं मानी। धीरे-धीरे महादेवी वर्मा जी का स्वाद भी बदल गया और वह भक्तिन के बनाए खाने को ही खूब खाकर संतुष्ट रहने लगी और उसी के तरीके से यानि देहाती तरीके से जीवन जीने लगी।

प्रश्न क्र॰ 9 (अथवा)

उत्तरः— कालजयी का अर्थ है— काल को जीतने वाला अर्थात् लम्बे समय तक जीवित रहने वाला। अवधूत ऐसे फक्कड़ सन्यासियों को कहते हैं जो विषम परिस्थितियों में

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION
www.opd
MPBSE

प्रश्न क्र.

भी साधना करते हैं। शिरीष का फूल गर्मी, लू को झेलते हुए फलों, फूलों से लदा रहता है और मस्त बना रहता है। इसलिए लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह माना है।

प्रश्न क्र. 10

उत्तर:— कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को खेत में अकेले काम करना, पशु चराना बहुत अखरता था अर्थात् उसे अकेलापन महसूस होता था। वह चाहता था कि कोई उसके साथ मित्र हो जिसके साथ वह हँसी मजाक करते हुए काम कर सके। कविता के प्रति लगाव हो जाने के बाद लेखक को एकांत में रहना अच्छा लगने लगा। क्योंकि अकेले में वह खेतों के दृश्य पर कविता सोचता फिर उसे भैंस की पीठ पर लकड़ी से या पत्थर की शिलाओं पर कंकड़ से या कागज पर कलम से लिखकर कण्ठस्थ करता। याद हो जाने पर उसे गा-गाकर नाचने लगता। इस प्रकार अब उसे अकेलापन अखरने की बजाय अच्छा लगने लगा।

प्रश्न क्र. 11

उत्तर:— समाचार लेखन में मुख्यतः निम्न बातों का जवाब देने की कोशिश की जाती है :—

(1) लेखक ने जो समाचार लिखा है वह किस विषय से सम्बन्धित है।

(2) समाचार किस समय का है।

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

(3) समाचार का स्थान क्या है?
(4) समाचार का प्रभाव क्या होगा?
(5) समाचार की सत्यता की जानकारी।
(6) समाचार, लेखक को किस स्त्रोत से प्राप्त हुआ।

प्रश्न क्रं 12 (अथवा)

उत्तर :- विरोधाभास अलंकार :- जहाँ वास्तविक विरोध न होकर केवल विरोध का आभास होता है, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ।

प्रश्न क्र. 13

उत्तर :- सोरठा छंद :- 48 मात्राओं का छंद है, जिसके पहले और तीसरे चरण में 11 मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरण में 13 मात्राएँ होती हैं। अर्थात सोरठा के सम चरणों में 13-13 मात्राएँ तथा विषम चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सोरठा दोहे का विपरीत होता है।

उदाहरण :-

ऽ। ऽ। ।। ऽ। ।।। ।ऽ।।। ।।।
बार बार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिक बयनि
कारन मोहि सुनाउ, गज गामिनि निज कोप कर।
ऽ।। ऽ। ।ऽ। ।। ऽ।।। ।। ऽ। ।।

MPBSE
vindia.com

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 14

मुहावरा	लोकोक्ति
(1) मुहावरा वाक्य का अंश होता है।	(1) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है।
(2) मुहावरा वाक्य में प्रयोग होकर अर्थ देता है।	(2) लोकोक्ति से पूरा अर्थ व्यक्त होता है।
उदा.:— मुँह की खाना (हार जाना)	उदा.:— मान न मान मैं तेरा मेहमान (जबरदस्ती किसी के गले पड़ना)

MPBSE

प्रश्न क्र. 15

(i) शुद्ध:— ईश्वर के अनेक नाम हैं।

(ii) शुद्ध:— मुझे मात्र बीस रुपये दीजिए।

प्रश्न क्र. 16.

तुलसीदास जी

(i) दो रचनाएँ:— रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली

(ii) भाव पक्ष:— तुलसीदास जी रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे। राम के प्रति तुलसी की भक्ति सेवक भाव की है। राम के भक्त होने के साथ-साथ उन्होंने अन्य देवी-देवताओं जैसे शिव, दुर्गा, गणेश आदि की स्तुति भी है। तुलसीदास का दार्शनिक भाव किसी मत या वाद से परे है।

प्रश्न क्र.

कला पक्ष :— रामचरितमानस अवधि भाषा में और कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका ब्रजभाषा में लिखी गयी, उनकी भाषा में सरलता, बोधगम्यता, माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि सभी गुणों का ~~परिवेश हुआ~~ समावेश हुआ है। तुलसीदास जी ने अपने युग की सभी शैलियों में काव्य रचना की हैं।

(iii) साहित्य में स्थान :— गोस्वामी तुलसीदास जी लोक कवि हैं। उनके काव्य से जीने की कला ~~सा~~ सिखी जा सकती हैं। उनके काव्य का बाह्य पक्ष जितना सबल हैं, उतना आन्तरिक पक्ष भी सबल हैं।

प्रश्न क्र. 17

महादेवी वर्मा

(i) दो रचनाएँ :— दीपशिखा, यामा, शृंखला की कड़ियां

(ii) भाषा शैली :— काव्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा की प्रारंभिक कविताएं ब्रजभाषा में हैं ~~बाद~~ इसके बाद की कविताएँ खड़ी बोली में लिखी गयी हैं। महादेवी वर्मा के काव्य की शैली भावात्मक गीत शैली हैं जिसमें सर्वत्र मधुरता एवं कोमलता हैं। महादेवी वर्मा का काव्य करूण रस से ओत-प्रोत हैं।

(iii) साहित्य में स्थान :— महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना भाव को देखते हुए उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता हैं। वह छायावादी के चार स्तंभों में से एक हैं और छायावादी ~~का~~ युग की एक महान कवयित्री मानी जाती हैं।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18

उत्तरः—

	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
(1)	वे संस्कृत शब्द, जो संस्कृत से ज्यों-के-त्यों हिन्दी मे प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।	(1) वे संस्कृत शब्द, जो आए तो संस्कृत से हैं किंतु रूप बदलकर या परिवर्तित होकर हिन्दी में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।
(2)	तत्सम का अर्थ होता है- "उसके समान" अर्थात हमारे स्त्रोत संस्कृत के समान।	(2) तद्भव का अर्थ होता है- "उससे उत्पन्न" अर्थात हमारे स्त्रोत संस्कृत से उत्पन्न।
(3)	उदाहरणः— अर्द्ध, ज्येष्ठ, एकादश, अग्नि।	3) उदाहरण :— आधा, जेठ, ग्यारह, आग।

प्रश्न क्र. 19 (अथवा)

(i) उत्तरः— शीर्षक :— "शौर्य भाव"

(ii) उत्तरः— राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है।

(iii) उत्तरः— सुदीर्घ :— "बहुत व्यापक या विशाल"

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 20 (अथवा)

कविता एक उड़ान है .... क्या जाने ?

संदर्भः- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक "आरोह भाग-2" में संकलित "कविता के बहाने" से लिया गया है। इसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंगः- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने कविता और चिड़िया की उड़ान की तुलना करते हुए कुछ सवाल उठाए हैं।

व्याख्याः- कवि कहता है कविता भी चिड़िया की तरह उड़ान भर सकती है। परन्तु कविता की उड़ान और चिड़िया की उड़ान में एक अंतर है। चिड़िया एक सीमित दायरे में ही उड़ सकती है पर कविता के भाव की, विचारों की उड़ान पर सीमा का कोई बंधन नहीं होता है। वह अनंत तक उड़ सकती है। इसके लिए एक दोहा भी प्रचलित है - "जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि"।

कविता केवल घर के भीतर होने वाली गतिविधियों पर ही नहीं लिखी जाती बल्कि वह बाहर के संसार को भी व्यक्त करती है। वह कभी इस घर के बारे में लिखी जाती है तो कभी उस घर के बारे में। कविता के कल्पना के पंख लगाकर पूरे संसार में घूम आती है यह उस बेचारी चिड़िया की सोच से परे है।

विशेषः (1) भाषा सरल, सुबोध और अभिव्यक्ति में सहायक है।
(2) प्रश्न शैली के प्रयोग से कविता और रोचक बन गयी है।

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21 (अथवा)

रात्रि की विभीषिका .... भरती थी।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक "आरोह भाग-2" की कहानी "पहलवान की ढोलक" से लिया गया है। इसके रचयिता फणीश्वरनाथ रेणु जी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में पहलवान की ढोलक की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- इस कहानी में लेखक ने गाँव में फैली महामारी का वर्णन किया है। गाँव में मलेरिये और हैजे से पीड़ित लोग भयार्त शिशु की तरह काँप रहे थे। गाँव में महामारी आने के बाद लोग मौत के डर से दुबके हुए थे। गाँव का एक पहलवान लुट्टन सिंह ढोलक बजा-बजाकर लोगों को कुछ हिम्मत देता था।

पहला पहलवान की ढोलक रात के सन्नाटे को कम करती है। रात्रि की भयंकरता को चुनौती देते हुए लुट्टन ढोलक बजाता था। वह सुबह से लेकर शाम तक ढोलक बजाता रहता था। उसकी ढोलक बज बजती है तो गाँव के बेचारे लोगों को सहारा मिलता है। उनकी निराशा में आशा का, और शक्ति का संचार पहलवान की ढोलक सुनकर ही होता था। पहलवान की ढोलक अर्द्धमृत लोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी। मलेरिये और हैजे से पीड़ित लोगों के लिए वह (पहलवान की ढोलक) उपचार का कार्य करती है। संजीवनी

प्रश्न क्र.

शक्ति भरने के कारण और परोपकार की भावना से अपने दोनों बेटों की मृत्यु के बाद भी वह ढोलक बजाता रहा। उसने अपने दोनों बेटों को महामारी की चपेट में खो दिया था।

विशेष:- भाषा सरल एवं सुबोध है।

M
P
B
S
E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र.22

आवेदन – पत्र

सेवा मे,
नगर निगम अध्यक्ष,
जबलपुर
विषय :– जल की अनियमित अपूर्ति हेतु आवेदन-पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन हैं कि पिछले एक माह से जबलपुर नगर मे जल की अनियमित अपूर्ति हो रही हैं। कई मोहल्लो मे तो एक-एक हफ्ते तक पानी नहीं आता है लोग जल-संकट से परेशान हैं। एक-एक बाल्टी पानी के लिए लोग इधन इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। नहाने-धोने तो छोड़िये लोगों को कभी-कभी पीने तक के पानी के लिए परेशान होना पड़ता हैं। उन्हें दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। जल के ही जीवन है, जल के बिना जीवन संकटग्रस्त हो जाता हैं। जल के बिना तो कुछ सम्भव ही नहीं हैं। हमे पीने के लिए, खाना बानान बनाने के लिए, हर कार्य क मे जल की आवश्यकता होती हैं।
अतः आपसे आपसे मेरी विनती की आप जबलपुर नगर मे जल की नियमित पूर्ति कराने की कृपा करें। जनहित मे यह कार्य आप शीघ्र से शीघ्र करें।
भवदीय
समस्त निवासी गण
जबलपुर

M P B S E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23

छात्रजीवन में अनुशासन

अनुशासन का अर्थ होता है – नियमो से बंधा हुआ या नियमो के पीछे-पीछे चलना। हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत मु महत्व है।

अनुशासन शब्द अनु + शासन दो शब्द के मेल से बना है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व। अनुशासन का अ से तात्पर्य की हम हर कार्य को निश्चित समय पर करना। छात्रों को विद्यालयों में पूर्ण अनुशासित रखा जाता है। उन्हें पूर्ण गणवेश मे आना होता है। साथ ही विद्यालय समय पर पहुँचना पड़ता है। अध्यापको से शिष्टता से बात करना अपने साथियो से अच्छा व्यवहार करना ये भी अनुशासन के अन्तर्गत ही आता है।

अनुशासन दो प्रकार का होत हो सकता है – आन्तरिक अनुशासन और बाह्य अनुशासन। आन्तरिक अनुशासन को हम आत्मनुसा आत्मानुशासन भी कह सकते हैं। यह विद्यार्थी स्वयं अपने आप में विकसित करता है। उस पर कोई दबाव नहीं होता है। बल्कि वह अपनी स्वेच्छा से अपने जीवन को नियमित बनाता है और हर कार्य को समय पर पूरा करता है। समय को महत्व देने वाला विद्यार्थी ही सदा जीवन में सफल होता है। दूसरी तरफ बाह्य अनुशासन छात्र में दूसरों द्वारा विकसित किया जाता है। उस पर हर काम को करने समय पर करने का दबाव बनाया जाता है। कई बार वह इसको बोझ भी समझ लेता है। जबरदस्ती नियमो का पालन करवाने से छात्र उसको अपने मन से नहीं करते है वे बस

प्रश्न क्र.

उसे फटा-फट करके खत्म कर देते हैं। छात्रों को शांति से अगर अनुशासन का महत्व बताया जाए तो वे इसे अपने जीवन मे अपना लेंगे।

प्रकृति भी हमें अनुशासन में रहना सिखाती है। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, तारे, ऋतुएँ, सब अपने-अपने समय से आते जाते है उसी प्रकार छात्रों को भी अपने हर काम को समय पर करना चाहिए। समय बहुत महत्वपूर्ण है। हमें उसके महत्व को समझना चाहिए। हमे हर चीज का समय निर्धारित कर लेना चाहिए, कि कितने घंटे पढ़ना है, सुबह कब उठना है, बाहर कब जाना है, हर विषय को कितना समय देना है। इन सबसे हमारी दिनचर्या बहुत नियमित हो जाएगी और पढ़ाई भी बहुत नियमित और आराम से होगी।

छात्रजीवन मे तो एक नियमित दिनचर्या होना ही चाहिए। एक नियमित दिनचर्या, अनुशासित जीवन जीने वाला विद्यार्थी ही सफलता प्राप्त कर सकता है। जो कि जिस विद्यार्थी की दिनचर्या अनियमित होता है, उसका जीवन पूरा अस्त-व्यस्त होता है और वह खुद अपने जीवन को अंधकार की ओर ले जाता है। उसे अपने जीवन के महत्व को समझना चाहिए और अपना जीवन सफल बनाने के लिए अनुशासन ~~पा~~ का पालन करना चाहिए।

MPBSE

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

वही विद्यार्थी अपने जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकता है जिसका जीवन अनुशासित है क्योंकि अनुशासि जीवन जीने वाले विद्यार्थी ने ही अपना लक्ष्य निर्धारित कर रखा होगा। अनियमित विद्यार्थी तो अपने जीवन के बारे मे सोचता ही नही होगा अर्थात् अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, जीवन को सफल बनाने के लिए अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। और हर छात्र को अपने जीवन में अनुशासन का पालन करना चाहिए।

MPBSE